ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

संस्कृत साहित्य में राम
Rama in Sanskrit Literature

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10//2021

देवेन्द्र दत्त पैन्यूली
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
उत्तरकाशी, भारत

सारांश

संस्कृत-साहित्य में भगवान् श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में वर्णित हैं। वे अखंड कोटि ब्रह्मांडनायक, सर्वजनमनोहर, साक्षात् विष्णु, सर्वशक्तिमान्, प्रपंचरहित, सर्वेश्वर, शुद्ध प्रकाश स्वरूप, सगुण-साकार, मायापति एवं सर्वज्ञ हैं । दशरथ नंदन के रूप में उन्हें धर्म की स्थापना हेतु संसार में अवतीर्ण होना पड़ता है । वे मानव-मर्यादाओं के आधार स्तम्भ हैं । वे दिव्य सौंदर्ययुक्त, कमल नयन तथा पूर्णचंद्र के सदृश मुखवाले हैं । वे सभी के आदर्श हैं । सभी लोग उनके द्वारा प्रसृत मार्ग का अनुकरण करते हैं। आदिकवि वाल्मीकि, कवि कुल गुरु कालिदास प्रभृति कवियों ने उनके आदर्श व्यक्तित्व एवं उनके ब्रह्मस्वरूप को अपने काव्यों का विषय बनाया है । वे सर्वलोकप्रिय, प्रियदर्शन, मृदुभाषी तथा भक्तों के लिए कल्पवृक्ष की सुखद छाया के समान हैं । वैदिक काल से वर्तमान काल तक उनके चरित्र के वैशिष्ट्य को लेकर महाकवियों ने नाटक, पुराण, गीतिकाव्य, भक्तिकाव्य आदि विविध ग्रंथों की रचना की है ।श्री राम भारत के ही नहीं अपितु विश्व के आदर्श हैं ।श्री रामकथा विश्व के अनेक देशों तक व्याप्त है, जिसका अध्ययन, मंचन तथा गुणगान होता रहता है। वे एक पत्नीव्रती, सत्यप्रतिज्ञ, धर्मरक्षक, शरणागतवत्सल, पापभंजक, जगद्रक्षक, मातृ-पितृभक्त तथा शत्रुसंहारक हैं । उनके नाम के स्मरण मात्र से प्राणी भवसागर के पार हो जाता है। उनमें मानवत्व और ईश्वरत्व दोनों का अद्भुत सम्मिश्रण है । भक्तों और सहृदयों के लिए वे कल्पतरु तथा पापियों के लिए काल के समान प्रचंड प्रताप वाले हैं।

In Sanskrit literature, Lord Sri Rama is described as Maryada Purushottam. He is Akhand Koti brahmand nayak, omnipotent, Lord Vishnu, almighty, omnipotent, omnipotent, omnipotent, pure light form, virtuous-form, mayapati and omniscient. In the form of Dasharatha Nandana, he has to incarnate in the world to establish religion. They are the pillars of human dignity. He is divinely beautiful, with a lotus flower and full moon-like face. He is the ideal of all. All people follow the path laid down by him. Adikavi Valmiki, KavikulguruKalidas Prabhati poets have made his ideal personality and his Brahma form the subject of his poems. He is all-popular, beloved, soft-spoken and like a pleasant shade of the Kalpavriksha for the devotees. From the Vedic period to the present period, the great poets have composed various texts like drama, Purana, Geetikavya, Bhaktikavya etc., regarding the specialty of his character. Shri Ram is not only the ideal of India but of the world. Shri Ram Katha is widespread in many countries of the world. Which is studied, staged and praised. He is an ecclesiastical devotee, truthful, religious protector, refuge of refuge, destroyer of sin, protector of the world, devotee of mother-father and destroyer of enemies. The mere remembrance of his name makes the creature cross the ocean of the universe. He has a wonderful amalgamation of both humanity and godliness. He is as great as Kalpataru to the devotees and the heart and to the sinners like Kaal.

मुख्य शब्दः प्रपंच, मर्यादा, प्रचंड, सर्वशक्तिमान्, पापभंजक, शत्रुसंहारक, प्रियदर्शन, भवसागर, विश्वात्मा, लोकाराधन, कमलनयन, लोकरंजन, कल्पतरु, शरणागतवत्सल, शरण्य, चराचर,अग्रणी,इक्ष्वाकु,परब्रह्म ।

Key words: Prapancha, Maryada, fierce, omnipotent, sin destroyer, enemy destroyer, Priyadarshan, Bhavsagar, Vishwaatma, Lokaradhan, Kamalnayan, Lokaranjan, Kalpataru, Sharnagat Vatsal, Sharanya, Charachar, leading, Ikshvaku, Parabrahma.

प्रस्तावना

भगवान श्री राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं । सृष्टि के प्रारंभ से सनातन धर्म का मूल वेद है । वेद में जिन- जिन देवताओं की उपासना वर्णित है, वे सभी प्राचीन हैं। भगवान श्री राम चराचर जगत में व्याप्त हैं। ऋग्वेद के सप्तम मंडल के 86वें अनुवाक में मंत्र रामायण नामक एक विख्यात प्रकरण है। जिसके 141वें मंत्र में श्री राम मंत्रोद्धार का वर्णन है । श्री नीलकंठ सूरी ने अपनी पुस्तक, 'मंत्र रहस्य प्रकाशिका'में सिद्ध किया है कि श्री राम की उपासना प्राचीन काल से ही चली आ रही है। 1 रामचरित एक ऐसा तत्त्व है जो विश्व संस्कृति में परिव्याप्त है । राम चरित सामाजिक उदात्त भावना का आश्रय भूत, कर्तव्य मार्ग का पथ प्रदर्शक, भारतीय नारियों

के अंतः करण को पातिव्रत्य से झंकृत करने का अनुपम साधन एवं उच्च आदर्श की कसौटी है। ऋग्वेद में राजा इक्ष्वाकु का वर्णन मिलता है। [2] अथर्ववेद में भी इक्ष्वाकु राजा का प्रसंग प्राप्त होता है जिसमें कहा गया है कि, हे औषधे! प्रसिद्ध इक्ष्वाकु राजा ने तुम्हें सभी व्याधियों के नाशक के रूप में जाना है । [3] शतपथ ब्राह्मण में अश्वपति कैकेय एवं राजा जनक का उल्लेख प्राप्त होताहै।[4] ऋग्वेद के दशम मंडल में दु:शीम, पृथवान्, वेन और राम आदि राजाओं का उल्लेख मिलता है।[5] इस प्रकार रामकथा के स्रोत वैदिक काल में किसी न किसी रूप में उपलब्ध होते हैं। वेद का विस्तार रामायण में प्राप्त होता है । रामरहस्योपनिषद् में उद्घाटित किया गया है कि राम ही ब्रह्म एवं राम ही परम तत्त्व है। बाल्मीकि ने राम को साक्षात् मूर्तिमान् धर्म कहा है।[6] रामपूर्वतापिन्युपनिषद् में कहा गया है कि जिस सच्चिदानंद तत्त्व में योगी-वृंद रमण करते हैं[7] उसी को परब्रह्म श्री राम कहते हैं । महाभारत के अनुसार त्रेता और द्वापर की संधि में श्रीरामावतार सिद्ध होता है। ब्रह्म संहिता[9] महारामायण[10] तथा वाल्मीकीयरामायण में राम को भगवान् कहा गया है। वाल्मीकीयरामायण में भगवान श्री राम साक्षात् नारायण हैं।[11] श्रीमद्भागवतपुराण में आया है कि सर्वकलाओं के अधिपति भगवान् जब हम लोगों पर अनुग्रह करते हैं तब इक्ष्वाकु वंश में वे श्री राम रूप में अवतीर्ण होते हैं।[12] आध्यात्मरामायण में कहा गया है कि उन्हीं पुराणपुरुष परमात्मा राम ने संसार पर परम अनुग्रह करने के लिए यह लोकविमोहन मायारूप धारण किया है।[13] रामपूर्वतापिन्युपनिद् में कहा गया है कि सच्चिदानंद महाविष्णु श्रीहरि जब रघुकुल में दशरथ के यहां अवतीर्ण हुए, उस समय उनका नाम राम हुआ । राम नाम के उच्चारण मात्र से संपूर्ण विश्व के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाता है और मानव मात्र के कल्याण की भावना अनायास प्रदीप्त हो जाती है। राम ही राम बीज है। राम में रकार साक्षात् राम का वाचक है और मकार शिव का वाचक तथा आकार ब्रह्मा का वाचक है । यह क्रिया ज्ञान और इच्छा के भेद से त्रिमूर्ति का वाचक है।[14] रामरहस्योपनिषद् में राम मंत्र को जानने वाला जीवन मुक्त हो जाता है। रां रामाय नमः इन छःअक्षरों के समुदाय का जो ध्यान करता है वह प्रसन्नवदन, शांत, क्रोधरहित एवं राम की तरह भक्तवत्सल हो जाता है ।[15] राम सामान्य पुरुष नहीं हैं।तत्त्ववेत्ता महर्षि वाल्मीकि ने अपनी आर्षऋतंभरा प्रज्ञा जनित शक्ति तथा धर्म के बल से राम के चरित्र का कर्तव्य आमलकी के समान प्रत्यक्ष अनुभव करने के बाद श्री राम,लक्ष्मण,सीता जी आदि के चरित्र को संसार के लोगों के लिए प्रकाशित किया ।

ततः प्रति धर्मात्मा तत्सर्वं योगमास्थितः ।पुरा यत्तत्र निर्वृतं पाणावामलकं यथा ।
तत्सर्वं तत्त्वतो दृष्ट्या धर्मेण स महामतिः।अभिरामस्य रामस्य तत्सर्वं कर्तुमुद्यतः
।वा०रा०बाल०1.3.4/6-7

परम दयालु होने के साथ-साथ वे अद्भुत पराक्रम के धनी हैं ।उन्होंने स्वयं कहा कि यदि मैं चाहूं तो पृथिवी में जितने भी पिशाच,दानव,यक्ष और राक्षस हैं, उन सब को एक अंगुली के अग्रभाग से मार सकता हूं ।उन्हें देवता,असुर,राक्षस तथा दूसरे लोग कदापि नहीं जीत सकते ।

पिशाचान्दानवान्यक्षान्पृथिव्यां चैव राक्षसान् ।अंगुल्यग्रेण
तान्हन्यामिच्छन्हरिगणेश्वरः।वा०रा०युद्ध०18.23
न हि रामो महातेजाः शक्यो जेतुं सुरासुरैः ।राक्षसैर्वापि चान्यैर्वा स्वर्गःपापजनैरिव। वा०रा० यु० 18.24

श्री राम ने अपने आचरण से समाज में जो मर्यादाएं स्थापित की हैं,वे अनूठी हैं ।उन्होंने विविध समस्याओं के समाधान का आदर्श रूप सबके सामने रखा,जिस में न कोई छद्म है और न ही आडंबर ।मनुष्य के जीवन में आने वाली सभी संबन्धों को पूर्ण रूप से निभाने का कौशल राम के अतिरिक्त किसी में भी नहीं है। वे गांभीर्य में समुद्र के समान तथा धैर्य में हिमाचल के समान हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

-भगवान राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं।उन्होंने अपने चरित्र से समाज में जो मर्यादांए स्थापित की हैं,वे वर्तमान समाज के लिए उपादेय हैं।भ्रातृप्रेम,मातृ-पितृ भक्ति,समाजसेवा, देशप्रेम,सामाजिक सौहार्द,पारिवारिक एकता,निर्भयता,सरलता,दया,परोपकार, तथा करुणा से आप्लावित राम का चरित केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है।समाज के हर वर्ग के प्रतिनिधि हैं राम । अतः:आवश्यकता है कि हम राम के इन आदर्शों को समाज के हर क्षेत्र तक ले जाने तथा समाज के मध्य व्याप्त कुरीतियों,कुसंस्कारों,जातिगत उन्माद एवं दुराचरण का परिमार्जन कर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करें तथा रामराज्य की परिकल्पना को साकार रूप दें ।

विस्तार

धर्मपूर्वक कर्त्तव्य का पालन करने में वे अग्रणी हैं ।त्याग की मर्यादा स्थापित करने के कारण ही उन्हें मर्यादापुरुषोत्तम कहा जाता है। राजा के रूप में राम आदरणीय हैं।प्रजा उन्हें प्राणों के समान प्यारी है ।लोकहित एवं प्रजा का रक्षण उनके रोम-रोम में बसा हुआ है।उनके राज्य में प्रजा का अहित कोई भी नहीं कर सकता ।उन्होंने भयरहित समाज की स्थापना की ।वे राज्यपद के अभिलाषी भी नहीं हैं ।पिता की आज्ञा पाते ही उन्होंने राज्य को तिनके के समान त्याग दिया । लोकाराधन उन्हें विशेष प्रिय है । विषम से विषम परिस्थिति में भी वे लोकाराधन के व्रत से पीछे नहीं हटते ।
दृढ़संकल्प के साथ प्रजा का हितसंपादन करना ही सज्जनों का मार्ग है।इसके लिए प्रेम,दया,सुख,यहां तक कि यदि जनकतनया जानकी जी को भी छोड़ना पड़े, तो उन्हें पीडा नहीं होगी।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा ।उत्तररामचरितम् 1.12

उनके अनुसार लोकाराधन ही सज्जनों का परम कर्तव्य है।

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनव्रतम्।
यत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणांश्च रक्षता ।उ०रा० 1.41

श्री राम कर्तव्यनिष्ठा के प्रति सदैव आस्थावान् रहे ।लोकमर्यादा के रक्षण में दुर्बलता न आने पाये,इसका उन्होंने विशेष ध्यान रखा ।माता कैकेयी के द्वारा वनवास मांगे जाने पर उन्होंने विनय पूर्वक कहा कि मैं सीता को,अपने राज्य को,प्रिय वस्तुओं को एवं अपने प्राणों को भी प्रस न्नतापूर्वक भरत को दे सकता हूं ।

अहं हि सीतां च राज्यं च प्राणनिष्ठान्धनानि च ।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भरताय प्रचोदितः।वा०रा०अयो०19.7

भ्रातृप्रेम राम में कूट-कूट कर भरा हुआ है ।युद्धक्षेत्र में जब मेघनाद द्वारा लक्ष्मण को शक्ति का प्रहार किया गया तो राम इस विपत्ति से दुःखी हो गये ।उन्होंने कहा कि यदि लक्ष्मण का प्राणांत हुआ तो मैं भी वानरों के देखते-देखते अपने प्राण त्याग दूंगा।

परित्यक्षाम्यहं प्राणान् वानराणां तु पश्यताम्।
यदि पंचत्वमापन्नःसुमित्रानंदवर्धनः।वा०रा०युद्ध०49.7

राम जब वनगमन के समय माता कौसल्या से मिलने गये तो मां का हृदय द्रवित हो गया ।वह कहने लगी कि जैसे गाय अपने बछड़े के पीछे-पीछे जाती है,वैसे ही मैं भी तुम्हारे पीछे जाऊंगी ।जहां तुम रहोगे,वहीं मैं भी रहूंगी ।इस अवसर पर राम ने अपनी माता को पातिव्रत धर्म का उपदेश दिया ।

यथा हि धेनुः स्वं वत्सं गच्छन्तमनुगच्छति।
अहं त्वामनुगमिष्यामि यत्र वत्सं गमिष्यसि ।वा०रा०अयो०24.9

राम आनन्द के दाता हैं।पारिवारिक या सामाजिक कलह उन्हें पसन्द नहीं है।वनवास की आज्ञा मिलते ही उन्होंने वन जाने के लिए माताओं से अनुमति ली तथा लक्ष्मण को शांत रहने का उपदेश दिया ।उन्होंने प्रेम पूर्वक आत्मीय जनों पर विजय प्राप्त की। राज्य त्याग कर वनगमन करना उनके उच्च आदर्श का नमूना है ।वनवास काल में भी राम ने उच्च आदर्शों की स्थापना की ॥राम के लिए कहा जाता है कि वे अपने वचनों से पीछे नहीं हटते । रामो द्विर्नाभिभाषते ।स्वधर्म पालन उनका स्वभाव है।

राम शरणागत वत्सल हैं ।जो एक बार भी उनकी शरण में जा कर" मैं तुम्हारा हूं "ऐसा कह कर जो रक्षा की प्रार्थना करता है,राम उसे समस्त प्राणियों से अभयदान देते हैं ।यह उनका शाश्वत नियम है।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम ।वा०रा०यु०18.33

अध्यात्मरामायण में राम को सच्चिदानंद, परब्रह्म, परमात्मा, नारायण, अंतर्यामी, परमेश्वर, स्वयं प्रकाशमान् पापहीन तथा भक्तवत्सल आदि कई नामों से संबोधित किया गया है।

श्री राम सदाचारपरायण,विनयशील,श्रद्धावान् और गुरुभक्त हैं ।महर्षि अगस्त्य के आश्रम में मुनीश्वर को आते देख लक्ष्मण और जानकी के साथ राम पृथिवी पर दण्ड के समान लेट गये ।उनकी इस विनम्रता को देख महर्षि अगस्त्य ने शीघ्र ही राम को उठाकर प्रेम पूर्वक उनका आलिंगन किया और उनके स्पर्श से महर्षि के नेत्र आनन्दाश्रुओं से भर गये ।

रामोऽपि मुनिमायान्तं दृष्ट्वा हर्षसमाकुलः।
सीतया लक्ष्मणेनापि दण्डवत्पतितो भुवि।
ज्ञ द्रुतमुत्थाय मुनिराड् राममाश्लिष्य भक्तितः।
तद्गात्रसंस्पर्शजाह्लादस्रवनेत्रजलाकुलः।

इसी प्रकार अपनी तपस्या से तपोवन को प्रकाशित करने वाले महर्षि अत्रि एवं अनुसूया के आश्रम में पहुंच कर श्री राम ने अपना नाम लेते हुए उन्हें दण्वत् प्रणाम किया ।राम ने कहा कि मैं पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर दण्डकवन में आया हूं ।इसी बहाने मैं आपका सान्निध्य पा कर धन्य हो गया हूं ।

गत्वा मुनिमुपासीनं भासयन्तं तपोवनम्।
दण्डवत्प्रणिपत्याह रामोऽहमभिवादये।
पितुराज्ञां पुरस्कृत्य दण्डकाननमागतः।
वनवासमिषेणापि धन्योऽहं दर्शनात्तव।

आनंदरामायण में राम ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं ।[20], राम के पृथ्वी पर शासक होने पर पृथ्वी अन्न से पूर्ण रहती है। सभी वृक्ष पूर्ण रूप से फूलते-फलते हैं । सभी मनुष्य धर्माचरण में लगे रहते हैं। सब स्त्रियां पतिभक्ता हैं। श्री राम के राजा रहते किसी को अपने पुत्र की मृत्यु नहीं देखनी पड़ती थी । सारा संसार आनंदमय रहता था।

राघवे शासति भुवं लोकनाथे रमापतौ ।वसुधा सस्यसंपन्ना फलवन्तश्च भूरुहाः।
रामराज्येसदानंदः सर्वासीज्जनान् भुवि।जनाःस्वधर्म निरताःपतिभक्तपराःस्त्रियः।
नापश्यत्पुत्रमरणं कश्चिदराजनि राघवे।[21]

अद्भुत रामायण में भी राम को साक्षात् ब्रह्म स्वरूप माना गया है।भक्त उनके दर्शन मात्र की अभिलाषा रखते हैं ।इसमें वर्णित है कि विश्वकर्मा की पुत्री तथा हेमा की सखी व दिव्य गंधर्व की पुत्री स्वयंप्रभा जो विंध्यवन की एक गुफा में राम के साक्षात् दर्शन के लिए तपोरत थी,राम का सामुख्य प्राप्त कर कहती हैं ।हे प्रभो! मुझे अचल भक्ति दीजिए ।मेरी जिह्वा सर्वदा आप के नाम का उच्चारण करे और

मेरा मन सीता-लक्ष्मणसहित आप की श्यामल मूर्ति का स्मरण करता रहे ।इसके अतिरिक्त मेरी कोई इच्छा नहीं है ।श्री राम मन से किसी के प्रति शत्रुभाव नहीं रखते ।राम कहते हैं कि शत्रुता तो मृत्यु पर्यंत ही रहती है ।अतःरावण की मृत्यु के बाद उसे स्वर्गादि उत्तम लोकों की प्राप्ति कराने वाले अंत्येष्टि कर्म कराने हेतु विभीषण को आज्ञा दी ताकि रावण का परलोक में अहित न हो ।

मरणांतानि वैराणि निर्वृतं नःप्रयोजनम्।क्रियतामस्य संस्कारो माप्येष यथा तव।

श्रीमद्भागवतपुराण में वेदव्यास ने राम के अद्वितीय व्यक्तित्व के संबंध में कहा है कि जिसने भी राम को छुआ,राम के साथ बैठा,राम को देखा,राम के साथ उठा या चला अथवा राम के साथ कुछ बात की,वे सब के सब उत्तरकोसलपुर निवासी भगवान् राम के साथ ही उन सांतानिक लोकों में चले गये,जहां बड़े से बड़े योगी एवं मुनि कठोर तप से पहुंच पाते हैं ।

स यैःस्पृष्टोऽभिदृष्टो वा संविष्टोऽनुगतोऽपि वा। कोसलास्ते ययुः स्थाने यत्र गच्छन्ति योगिनः।
पुरुषो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन्।आनृशंस्यपरो राजन् कर्मबन्धैर्विमुच्यते ।

जो व्यक्ति अपने कानों से श्री राम के चरित्र का श्रवण करता है,उस में सरलता,शीलता,मृदुलता आदि गुण आ जाते हैं और वह समस्त कर्म बंधनों से मुक्त हो जाता है । योगवासिष्ठ में महातेजस्वी तत्त्व द्रष्टा महर्षि वसिष्ठ ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ब्रह्मांड में राम के समान ज्ञानी और उदार व्यक्ति मैंने नहीं देखा। उनके समान न कोई हुआ है और न ही कोई होने वाला है।

महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य रघुवंश में राम को हरि या विष्णु का पर्यायवाची माना है। [25], उनके अनुसार राम साधारण पुरुष नहीं हैं। वे निर्गुण और सगुण के समवेत रूप हैं। वे स्वयं प्रकाश, कूटस्थ, नित्यतृप्त, सच्चिदानंद, निरवय, निराकार तथा निर्गुण हैं। माया से आच्छादित होने पर वे सगुण रूप धारी जगत्सृष्टा, जगत्पालक और जगत्संहारक ईश्वर बन जाते हैं।

भगवान् श्री राम मानवमात्र को कर्त्तव्य की शिक्षा देने हेतु ही अवतरित हुए हैं ,केवल राक्षसों के संसार के लिए नहीं । मानवजाति को उचित मार्गदर्शन के निमित्त ही वे सामान्य मानव की तरह श्रीजानकी जी के विरह में वन-वन भटकते हैं तथा सीता की रक्षा के लिए अहर्निश तत्पर रहते हैं । स्त्री का सम्मान व उसकी रक्षा का उपदेश उनके चरित्र से परिलक्षित होता है।[27]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि भगवान राम का विशुद्ध, सत्वमय, परममनोहर मधुर स्वरूप इस संसार में प्रकट न हुआ होता तो परब्रह्म के साक्षात्कार की बात संसार में प्रसंग ही नहीं मिलता । राम का ज्ञान होने पर उनके मधुरस्वरूप के परिशीलन से निर्मल चित्त होकर भक्तों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों एवं रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया है । वे अपने पारमार्थिक रूप से निराकार होते हुए भी सांसारिक जीवों पर अनुकंपा और उनके कल्याण के निमित्त सगुण रूप में प्रकट होते हैं । वे संसार के आदर्श हैं। संपूर्ण मर्यादाओं के प्रतिपादक हैं। पद्म पुराण और अध्यात्मरामायण में भगवान वेदव्यास ने उनके व्यापक स्वरूप की चर्चा की है। वे योग, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के साक्षात विग्रह हैं। वे अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिष्ठान, समस्त आनंदों के सार, अनुपम, अचिन्त्य एवं दिव्य गुणों से ओतप्रोत हैं । श्री राम ने जिस तरह व्यक्ति के आचरण की मर्यादाएं बताई हैं उसी तरह स्वयं से समाज और देश की विभिन्न समस्याओं के समाधान का आदर्श भी समाज के सम्मुख रखा है । वे भक्तकल्पतरु हैं। मानव समाज को मर्यादा का शिक्षण देने के लिए इस संसार में अवतरित हुए हैं। महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें साक्षात् विष्णु कहा है । सज्जनों की रक्षा एवं दुर्जनों को दंडित करने का उनका अद्वितीय स्वभाव है। वे वर्णाश्रम धर्म के रक्षक एवं मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

इस प्रकार संस्कृतसाहित्य में वेद से लेकर पुराण, और उपनिषदों से लेकर लौकिक साहित्य में राम भारतीय संस्कृति में रचे-बसे हैं । उनका चरित्र समाज के लिए आदर्श है। अतः संपूर्ण विश्व आनंदकंद श्री राम के ऋणी हैं। इनका चिंतन एवं मनन सब दुखों को दूर करने वाला एवं आनंद प्राप्ति का साधन है। अतः हर भारतीय को श्री राम के आदर्श स्वरूप का ध्यान करते हुए समाज का हित चिंतन करना चाहिए ।

संदर्भ सूची

1. *कल्याण राम भक्तिअंक गीता प्रेस 1994 पृष्ठ 275*
2. *यस्येक्ष्वाकुरूपव्रते रेवान् मराप्येधते।ऋग्वेद 10।60।04*
3. *त्वा वेद पूर्वं इक्ष्वाकु यम्। अथर्ववेद 19।39। 9*
4. *ते होचुःअश्वपतिर्वा अयं कैकेयः सम्प्रति वैश्वानरं वेद। शतपथ ब्राह्मण 10।6-1/2*
5. *प्र तद् दुःशीमे पृथवाने, वेने प्र रामे वोचमसुरे। ऋ० 10।93।14*
6. *राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः। राम एव परं तत्त्वं श्री राम ब्रह्मतारकम्। रामरहस्योपनिषद् 1।6*
7. *रामो विग्रहवान्धर्मः । वाल्मीकीयरामायण 3।37।13*
8. *रमन्ते योगिनोऽनंन्ते नित्यानंदचिदात्मनि। इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते। रामपूर्वतापिन्युपनिषद् 1।6*
9. *संध्ये समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च। अहं दाशरथी रामो भविष्यामि जगतपतिः । महाभारत-शांतिपर्व 339।85*
10. *भरण:पोषणार्थः शरण्यःसर्वव्यापकः । करुणःषड्गुणैःपूर्णः रामस्तु भगवान् स्वयम्। महारामायण*
11. *पूर्णःपूर्णावतारश्च - राघवःभगवान् स्वयम्। ब्रह्मसंहिता*

12. सहस्रश्रृंगो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः।त्वं त्रयाणां हि लोकानामादिकर्ता स्वयंप्रभुः। वाल्मी०रामा०6/117/18
13. भगवान्नारायणो देवः - प्रविष्टो मानुषीं तनुम्।वा०रा०यु०117.18
महेन्द्रश्च कृतो राजा बलिं बद्ध्वा सुदारुणम्।सीता लक्ष्मीर्भवान्विष्णुर्देवःकृष्णःप्रजापतिः। वा०रा०यु०117.27एतस्मिन्नंतरेविष्णुरुपयातोमहाद्युति।शंखचक्रगदापाणिःपीतवासा जगत्पतिः।वा०रा०बाल०15.16 विष्णो पुत्रत्वमागच्छ कृत्वात्मानं चतुर्विधम्। वा०रा०बाल०15.21
14. अस्मद्प्रसादसुमुखः कलयाकलेशः। इक्ष्वाकुवंशमवतीर्य गुरोर्निदेशे। श्रीमदभागवत 2।7।23
15. सोऽयं परमात्मा - धत्ते परानुग्रह एष रामः। अ०रा० 1.5.49
16. यथैव वटबीजस्थः - शक्तयः तिस्र एव च। रामपूर्वतापिन्युपनिषद् 2.2/3
17. अध्या०रामायण 1.1.17/18,32/33,1.2
18. 7,1.5.49,1.7.20,2.5.11,3.5.59/6 .
19. अ०रा०3.3.13/14
20. अ०रा०2.9/80-81
21. सः ब्रह्मा सः शिवश्चाथ सः हरिः सः सुरेश्वरः । अ०रा० मनो० 4.178.
22. अ०रा०13/196.197.राज्यकांड 15.1
23. वा०रा०युद्ध०109.25
24. न रामेण समोऽस्तीह दृष्टो लोकेषु कश्चन । योगवासिष्ठ 1.32.45
25. श्रीमद्भागवत 9.11.22
26. रामाभिधानो हरिरित्युवाच । रघुवंश 13.1
27. नमो विश्वसृजे --याथार्थ्यं वेद कस्तव । रघुवंश 10.96, 18/20,24
28. मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षो वधायैव न केवलं विभोः।
29. कुतोऽन्यथा स्याद् रमतः स्वआत्मनःसीताकृतानि व्यसनानीश्वरस्य ॥श्रीमद्भागवत 5.19.5?